3- तँतारा-वामीरो कथा

लेखक- लीलाधर मंडलोई

संक्षिप्त परिचय–

तताँरा-वामीरो कथा प्रेम पर आधारित एक प्रसिद्ध लोककथा है। अंदमान द्वीपसमूह के अंतिम द्वीप का नाम है लिटिल अंदमान। निकोबार द्वीप समूह के पहले द्वीप का नाम है – कार-निकोबार। कहा जाता है कि ये दोनों द्वीप-समूह कभी एक ही थे। प्रस्तुत पाठ में यहीं रहने वाले युवक ततांरा व युवती वामीरो के प्रेम कहानी का वर्णन है।

प्रश्न सं० 1- ततांरा सब जगह क्यों चर्चित था?

उत्तर– ततांरा एक नेक और मददगार व्यक्ति था। सदैव दूसरों की सहायता करने को तैयार रहता था। वह द्वीपवासियों की सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझता था। इन्हीं कारणों से लोग उसकी चर्चा करते थे।

प्रश्न सं० 2- ततांरा की तलवार के बारे में लोगों का क्या विचार था?

उत्तर– लोगों का मानना था कि तलवार लकड़ी की होने के बावजूद अद्भुत दैवीय शक्ति से युक्त है। ततांरा अपनी तलवार को कभी अलग नहीं करता था और न ही दूसरों के सामने उसका उपयोग करता था।

प्रश्न सं० 3- ततांरा अपनी सुध-बुध क्यों खोने लगा?

उत्तर– जब ततांरा विचारमग्न होकर बालू पर बैठकर सूर्य की अंतिम रंग-बिरंगी किरणों को समुद्र पर निहार रहा था तब कहीं पास से उसे मधुर गीत गूंजता हुआ सुनाई दिया। गायन इतना प्रभावी था कि वह अपनी सुध-बुध खोने लगा।

प्रश्न सं०4 — घर पहुँचकर वामीरो को बेचैनी क्यों महसूस हुई ?

उत्तर — वामीरो घर पहुँचकर भीतर ही भीतर कुछ बेचैनी महसूस करने लगी। वह तताँरा को चाहने लगी थी। उसे जीवन साथी के रूप मे पाना चाहती थी परंतु गाँव के नियमानुसार यह संभव नहीं था। इसलिए उसे बेचैनी महसूस हो रही थी।

प्रश्न सं०5 — वामीरो तताँरा के सामने आकर ठिठक क्यों गई ?

उत्तर — वामीरो तताँरा के सामने आकर इसलिए ठिठक गई क्योंकि उसने अपने प्रेम की मौन स्वीकृति तो दे दी थी। अब आगे क्या करे यह उसकी समझ में नहीं आ रहा था। लज्जा, भय और संकोच के कारण उसके पैर थम से गए थे।

प्रश्न सं०6 — वामीरो ने तताँरा को बेरुखी से क्या जवाब दिया ?

उत्तर — वामीरो ने तताँरा को बेरुखी से जवाब दिया कि वह उसके कहने पर गाना क्यों गाए ? वह पहले उसे बताए कि वह कौन है ? वह उससे असंगत प्रश्न क्यों कर रहा है ? वह उसे घूर क्यों रहा है ?

प्रश्न सं०7 — वामीरो से मिलने के बाद तताँरा के जीवन में क्या परिवर्तन आया ?

उत्तर — उसके मन में हर समय वामीरो की तस्वीर घूमती रहती और जुबान पर केवल वामीरो का नाम रहता। वामीरो के बिना उसे एक-एक पल पहाड़ से भी अधिक भारी प्रतीत होने लगा।

प्रश्न सं०8– ततॉरा अपनी कमर में सदैव तलवार क्यों बाँधे रहता था।

उत्तर — ततॉरा के तलवार में अदभुत शक्ति थी, यद्यपि वह लकड़ी की बनी हुई थी तथापि उसमें विलक्षण शक्ति थी। वह कभी किसी के सामने उसका उपयोग नहीं करता था। शायद वह तलवार सामाजिक मर्यादा को बनाये रखने के लिए थी जिसका उपयोग वह सबके हित में तब करता है जब सामाजिक मर्यादा पर आँच आने वाली थी।

प्रश्न सं०9– ततॉरा ने वामीरो से बार-बार एक ही आग्रह क्यों किया?

उत्तर— ततॉरा वामीरो से बार–बार एक ही आग्रह इसलिए किया क्योंकि वह अपनी सुध-बुध खो चुका था। वह वामीरो के मधुर गीत में इतना खोया था कि वामीरो के दूसरे सवाल सुन ही नहीं सका।

प्रश्न सं०10– ततॉरा समुद्र तट पर किसलिए आया था?

उत्तर— ततॉरा समुद्र तट पर दिन भर के अथक परिश्रम के बाद अपनी थकान मिटाने के उद्देश्य से आया था ताकि शांति अनुभव कर सके।

प्रश्न सं०11– लोग ततॉरा के करीब क्यों रहना चाहते थे?

उत्तर— लोग उसके करीब इसलिए रहना चाहते थे क्योंकि वह मुसीबत में सबकी सहायता करता था। उसका व्यक्तित्व तो आकर्षक था ही, साथ ही वह आत्मीय स्वभाव का था।

प्रश्न सं०12- ततौरा की तंद्रा कैसे भंग हुई ?
उत्तर — ततॉरा वामीरो का मधुर स्वर सुनकर सुध-बुध खोए बैठा था कि अचानक समुद्र की तरंग ने उसकी तंद्रा भंग कर दी।

प्रश्न 13— वामीरो ततॉरा को क्यों भूल जाना चाहती थी?
उत्तर— वामीरो ततॉरा को इसलिए भूल जाना चाहती थी क्योंकि वह दूसरे गाँव का युवक था। गाँव का नियम था कि उनकी बिरादरी में अन्य किसी गाँव के युवक के साथ विवाह सम्बन्ध नही स्थापित हो सकता।

प्रश्न सं 14— क्रोध में ततॉरा ने क्या किया?
उत्तर— क्रोध में आकर ततॉरा ने अपनी तलवार को धरती में घोंप दिया। फिर उसे अपनी ओर खींचते-खींचते किनारे तक ले गया। उसके इस प्रहार से धरती फट गई और द्वीप दो टुकडों में बँट गया।

प्रश्न सं०15— ततॉरा ने वामीरो से क्या याचना की?
उत्तर— ततॉरा ने वामीरो से अगले दिन उसी स्थान पर उससे मिलने की याचना की। इससे पूर्व उसने एक और याचना की कि वह अपना अधूरा गाना पूरा करे।

प्रश्न सं०16— ततॉरा-वामीरो कहाँ की कथा है?
उत्तर — ततॉरा-वामीरो की कथा निकोबार द्वीप समूह के प्रमुख द्वीप 'कार-निकोबार' की है।

प्रश्न सं०17— तताँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार में क्या परिवर्तन आया ?

उत्तर— तताँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार में यह परिवर्तन आया कि वहाँ लोग अब दूसरे गाँवों से भी वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने लगे। दोनों की त्यागमयी मृत्यु ने लोगों की विचारधारा में एक सुखद तथा अद्भुत परिवर्तन ला दिया तथा उनकी रूढ़िवादी परंपराएँ भी परिवर्तित हो गई।

प्रश्न सं०18— प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति प्रदर्शन के लिए किस प्रकार के आयोजन किए जाते थे।

उत्तर— प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति प्रदर्शन के लिए 'पशु-पर्व' का आयोजन किया जाता था। इसमें हृष्ट-पुष्ट पशुओं के अतिरिक्त पशुओं से युवकों की शक्ति-परीक्षा प्रतियोगिता भी होती थी। सभी गाँवों के लोग इसमें हिस्सा लेते थे। इस आयोजन में नृत्य-संगीत और भोजन का भी प्रबंध किया जाता था।

प्रश्न सं०19— निकोबार द्वीपसमूह के विभक्त होने के बारे में निकोबारियों का क्या विश्वास है ?

उत्तर— निकोबार द्वीपसमूह के विभक्त होने के बारे में निकोबारियों का यह विश्वास है कि प्राचीन काल में ये दोनों द्वीप एक ही थे। इनके विभक्त होने में तताँरा और वामीरो की प्रेम-कथा की त्यागमयी मृत्यु है।

प्रश्न सं०2— पाठ एवं लेखक का नाम लिखें।

उत्तर— 'तताँरा वामीरो कथा' लीलाधर मंडलोई।

4. तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेन्द्र

लेखक- प्रहलाद अग्रवाल

संक्षिप्त परिचय—

कवि एवं गीतकार शैलेन्द्र ने जब फणीश्वरनाथ रेणु की अमर कृति 'मारे गए गुलफाम' को 'तीसरी कसम' के रुप में सिने परदे पर उतारा। इस फिल्म ने न केवल अपने गीत- संगीत, कहानी आदि के लिए प्रसिद्धि प्राप्त की बल्कि इसमें अपने जमाने के सबसे बड़े शोमैन राजकपूर ने अपने फिल्मी जीवन का सबसे बेहतरीन अभिनय कर सबको हैरान कर दिया।

प्रश्न सं०1- तीसरी कसम फिल्म को कौन- कौन से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया?

उत्तर— तीसरी कसम फिल्म को निम्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया—

(i) राष्ट्रपति स्वर्णपदक
(ii) मास्को फिल्म फेस्टिवल पुरस्कार
(iii) बंगला जर्नलिस्ट एसोसिएशन का सर्वश्रेष्ठ फिल्म पु०

प्रश्न सं०2- शैलेन्द्र ने कितनी फिल्में बनाईं?

उत्तर— शैलेन्द्र ने अपने जीवन में केवल एक ही फिल्म का निर्माण किया। 'तीसरी कसम' उनकी पहली व अंतिम फिल्म थी।

प्रश्न सं०3 — राजकपूर द्वारा निर्देशित कुछ फिल्मों के नाम बताइए।

उत्तर— राजकपूर ने अनेक फिल्मों का निर्माण किया-

मेरा नाम जोकर, संगम, सत्यम् शिवम् सुंदरम्, अजंता, मैं और मेरा दोस्त, जागते रहो आदि।

प्रश्न सं०4– 'तीसरी कसम' फिल्म के नायक व नायिकाओं के नाम बताइए और फिल्म में इन्होंने किन पात्रों का अभिनय किया है?

उत्तर— 'तीसरी कसम' फिल्म के नायक राजकपूर एवं नायिका वहीदा रहमान थीं। राजकपूर ने 'हीरामन' गाड़ीवान का तथा वहीदा रहमान ने नौटंकी कलाकार 'हीरा बाई' का अभिनय किया।

प्रश्न 5– राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' के निर्माण के समय किस बात की कल्पना भी नहीं की थी?

उत्तर— राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' के निर्माण के समय कल्पना भी नहीं की थी कि फिल्म के पहले भाग के निर्माण में ही छह साल का समय लग जाएगा।

प्रश्न सं०6– 'तीसरी कसम' फिल्म को "सैल्यूलाइड" पर लिखी कविता क्यों कहा है?

उत्तर— सैल्यूलाइड का अर्थ है– फिल्म को कैमरे की रील में उतारकर चित्र प्रस्तुत करना। 'तीसरी कसम' फिल्म को सैल्यूलाइड पर लिखी कविता इसलिए कहा गया है क्योंकि यह फिल्म कविता के समान कोमल भावनाओं से पूर्ण एक सार्थक फिल्म है। इस फिल्म की मार्मिकता कविता के समान है।

प्रश्न सं०7– 'तीसरी कसम' फिल्म को खरीददार क्यों नहीं मिल रहे थे?

उत्तर— इस फिल्म में किसी भी प्रकार के अनावश्यक मसाले जो फिल्म के पैसे वसूल करने के लिए आवश्यक होते हैं, नहीं डाले गए थे। फिल्म वितरक उसके साहित्यिक महत्त्व एवं गौरव को नहीं समझ सकते थे इसलिए उन्होंने उसे खरीदने से इनकार कर दिया।

प्रश्न सं• 8 — शैलेन्द्र के अनुसार कलाकार का कर्त्तव्य क्या है ?

उत्तर — शैलेन्द्र के अनुसार कलाकार का कर्त्तव्य है कि वह दर्शकों की रुचियों में परिष्कार करने का प्रयत्न करे। उनके मानसिक स्तर को ऊपर उठाए। वह लोगों में जागृति लाए और उनमें अच्छे-बुरे की समझ को विकसित करे।

प्रश्न सं०9— फिल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफ़ाई क्यों कर दिया जाता है ?

उत्तर — फ़िल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफाई इसलिए किया जाता है जिससे फिल्म निर्माता दर्शकों का भावनात्मक शोषण कर सकें। निर्माता-निर्देशक हर दृश्य को दर्शकों की रुचि का बहाना बनाकर महिमा-मंडित कर देते हैं जिससे उनके द्वारा खर्च किया गया एक-एक पैसा वसूल हो सके और उन्हें सफलता मिल सके।

प्रश्न सं०10 — लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है। शोमैन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर — शोमैन का अर्थ है— आकर्षक व्यक्तित्व। ऐसा व्यक्ति जो अपने कला-गुण, व्यक्तित्व तथा आकर्षण के कारण सब जगह प्रसिद्ध हो। राजकपूर अपने समय के एक महान फिल्मकार थे। एशिया में उनके निर्देशन में अनेक फिल्में प्रदर्शित हुई थीं। उन्हे एशिया का सबसे बड़ा शोमैन इसीलिए कहा गया है शोमैन से संबंधित सभी मानदंडों पर खरी उतरती थीं।

प्रश्न सं०11- फिल्म 'श्री 420' के गीत 'रातें दसों दिशाओं से कहेंगी अपनी कहानियाँ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति क्यों की ?

उत्तर— फिल्म 'श्री ४२०' के इस गीत पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति की क्योंकि उनका मानना था कि दर्शक चार दिशाएँ तो समझते हैं लेकिन दस दिशाओं का गहन ज्ञान दर्शकों को न होगा, इसी कारण उनका यह मानना था कि दर्शकों के ऊपर उथलापन थोपना उचित न होगा।

प्रश्न सं०।२- दरअसल इस फिल्म की संवेदना किसी दो से चार बनाने वाले की समझ से परे है।

उत्तर— 'तीसरी कसम' फिल्म संवेदनात्मक तथा भावनात्मक थी। उसे अच्छी रुचियों वाले संस्कारी मन और कलात्मक लोग ही समझ-सराह सकते थे। कवि शैलेन्द्र की फिल्म निर्माण के पीछे धन और यश पाने की अभिलाषा नहीं थी। वे इस फिल्म के माध्यम से अपने भीतर के कलाकार को संतुष्ट करना चाहते थे। इसीलिए इस फिल्म की गहरी संवेदना लोगों की समझ और सोच से ऊपर की बात है।

प्रश्न सं०।३— व्यथा व्यक्ति को पराजित नहीं करती, उसे आगे बढ़ने का संदेश देती है।

उत्तर— लेखक के अनुसार हमारी ज़िंदगी में दुख, तकलीफें तो आती रहती हैं, परंतु हमें उन दुखों से हार नहीं मानना चाहिए। यदि व्यथा या करुणा को सकारात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाय तो वह मनुष्य को परास्त या निराश नहीं करती, वह मनुष्य को आगे ही आगे कुछ कर गुजरने की प्रेरणा देती है।

प्रश्न सं०।४— राजकपूर की किस बात पर शैलेन्द्र का चेहरा मुरझा गया?

उत्तर— 'तीसरी कसम' फिल्म की कहानी सुनकर राजकपूर ने पारिश्रमिक एडवांस देने की बात कही। इस बात पर शैलेन्द्र का चेहरा मुरझा गया।

प्रश्न सं० 15— फिल्म समीक्षक राजकपूर को किस तरह का कलाकार मानते थे ?

उत्तर— समीक्षक मानते हैं कि राजकपूर एक बड़े फिल्म निर्माता, सफल अभिनेता और कुशल निर्देशक थे। उन्हें जो भी चरित्र अभिनीत करने के लिए दिया जाता था, वे उसमें एकाकार हो जाते थे। उनका महिमामय व्यक्तित्व किसी भी चरित्र की आत्मा में उतर जाता था।

प्रश्न सं० 16— आशय स्पष्ट करें—

"वह तो एक आदर्शवादी भावुक कवि था, जिसे अपार सम्पत्ति और यश तक की इतनी कामना नहीं थी जितनी आत्मसंतुष्टि के सुख की अभिलाषा थी।"

उत्तर— इसका आशय है कि शैलेन्द्र एक आदर्शवादी भावुक हृदय कवि थे। उन्हें अपार सम्पत्ति तथा लोकप्रियता की कामना इतनी नहीं थी, जितनी आत्मसंतुष्टि, मानसिक शांति, मानसिक सांत्वना आदि की थी, क्योंकि वे सदवृत्तियाँ धन से नहीं खरीदी जा सकतीं, न ही इन्हें कोई भेंट कर सकता है। इन गुणों की अनुभूति तो अंदर से ईश्वर की कृपा से ही होती है।

प्रश्न सं० 17— लेखक ने ऐसा क्यों लिखा कि 'तीसरी कसम' ने साहित्य रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है?

उत्तर— यह वास्तविकता है कि 'तीसरी कसम' ने साहित्य रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है। यह फणीश्वर नाथ रेणु की रचना 'मारे गए गुलफाम' पर बनी है। इस फिल्म में मूल कहानी के स्वरूप को बदला नहीं गया, तथा साहित्य की मूल आत्मा को पूरी तरह से सुरक्षित रखा गया था।

प्रश्न सं० 18— शैलेन्द्र के निजी जीवन की छाप उनकी फिल्म में झलकती है- कैसे ?
उत्तर— शैलेन्द्र के निजी जीवन की छाप उनकी फिल्म 'तीसरी कसम' में झलकती है। शैलेन्द्र अपने जीवन में बहुत उदार, गंभीर, शांत और भावुक कवि हृदय के व्यक्ति थे। उनके इन सभी गुणों का समावेश फिल्म में पूरी तरह से उजागर होता है।

प्रश्न सं० 19— उनके गीत भाव-प्रवण थे— दुरुह नहीं।
उत्तर— इसका अर्थ है कि शैलेन्द्र के द्वारा लिखे गीत भावनाओं से ओत-प्रोत थे, उनमें गहराई थी, उनके गीत जन सामान्य के लिए लिखे गए गीत थे तथा गीतों की भाषा सहज, सरल थी क्लिष्ट नहीं थी तभी तो आज भी इनके द्वारा लिखे गीत गुनगुनाए जाते हैं।

प्रश्न सं० 20— पाठ एवं लेखक का नाम लिखें।
उत्तर— 'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेन्द्र', शैलेन्द्र।